अंक 11 माहः जून 2025

विश्वत

मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN AISECT GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका

"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

"शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य कौशल और आत्मविश्वास के साथ जीवन जीने की तैयारी करना है।" "अगर हम युवाओं को सही शिक्षा और कौशल दें, तो वे न केवल अपना जीवन संवारेंगे, बल्कि देश की तकदीर भी बदल देंगे।"

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

संपादकीय

आजीविका कौशल प्रबंधन एवं विकास : तकनीकी नवाचार के माध्यमों से सशक्त भविष्य की ओर

आज की दुनिया तेजी से बदल रही है। वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण और नवाचार के इस युग में जहाँ रोजगार के स्वरूप में निरंतर परिवर्तन हो रहा है, वहीं यह आवश्यक हो गया है कि आजीविका कौशल को भी समय के अनुरूप न केवल विकसित किया जाए, बल्कि उसका कुशल प्रबंधन भी सुनिश्चित किया जाए। ऐसे समय में तकनीकी नवाचार इस क्षेत्र में एक क्रांतिकारी भूमिका निभा रहे हैं।

तकनीक अब केवल आईटी सेक्टर तक सीमित नहीं रही; यह कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, विपणन, व्यापार, दस्तकारी और निर्माण जैसे विविध क्षेत्रों में नई संभावनाओं के द्वार खोल रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन, ड्रोन तकनीक, डिजिटल प्लेटफॉर्म्स और वर्चुअल रियलिटी जैसे नवाचार न केवल कार्य दक्षता को बढ़ा रहे हैं, बल्कि युवाओं को कौशल के ऐसे अवसर दे रहे हैं जो पहले केवल कल्पना मात्र थे।

शिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण केंद्रों और नीति निर्माताओं के सामने अब सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वे इन तकनीकों को स्थानीय जरूरतों और सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे के अनुरूप ढालें। जब तक तकनीकी नवाचारों को जमीनी स्तर पर व्यावहारिक बनाकर जीवन से जोड़ा नहीं जाएगा, तब तक उनका प्रभाव सीमित ही रहेगा।

डिजिटल साक्षरता, मोबाइल आधारित प्रशिक्षण, ऑनलाइन स्किल प्लेटफॉर्म, ओपन एजुकेशन रिसोर्सेज और भाषा आधारित तकनीकी सामग्री अब गांवों और छोटे शहरों में बैठे युवा को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने का साहस दे रही है। यह समय है जब हमें यह समझना होगा कि आजीविका कौशल केवल जीविका अर्जन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक आत्मनिर्भरता, आर्थिक न्याय और मानव गरिमा का भी आधार है। तकनीकी नवाचारों के माध्यम से यदि हम युवाओं को आत्मनिर्भर बना सके, तो एक समावेशी, न्यायसंगत और टिकाऊ विकास की ओर बढ़ना संभव है।

इस अंक में हम ऐसे ही प्रयासों, उदाहरणों और संभावनाओं की पड़ताल कर रहे हैं, जो तकनीक को केवल 'साधन' नहीं, बल्कि 'सशक्तिकरण' के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

— संपादक
डिजिटल न्यूजलेटर टीम
'Vishvaat'

अंक 11, क्रमांक -2,
माहः जून 2025

विश्वत

वृतांत

1. विश्व पर्यावरण दिवस पर डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय में पौधारोपण के साथ ली गई पर्यावरण संरक्षण की शपथ प्रकृति से मिली अमूल्य निधियों को लौटाना ही होगा पर्यावरण सुधार का मार्ग

— हीरालाल पाटीदार

डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधारोपण व नुक्कड़ नाटक के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का प्रभावी संदेश दिया गया। मुख्य अतिथि हीरालाल पाटीदार व अन्य वक्ताओं ने प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व निभाने और सतत विकास की दिशा में कार्य करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों, जनप्रतिनिधियों और पर्यावरण प्रेमियों की सक्रिय भागीदारी रही। यह आयोजन पर्यावरण के प्रति चेतना और व्यवहारिक प्रयासों को प्रोत्साहित करने वाली प्रेरक पहल सिद्ध हुआ।

2. हिंदी को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक कदम – 'विश्वरंग अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड 2025' की विस्तृत जानकारी हेतु पत्रकार वार्ता आयोजित

डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा में आयोजित पत्रकार वार्ता में 'विश्वरंग अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड 2025' की विस्तृत जानकारी साझा की गई। यह आयोजन हिंदी भाषा को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसमें 50 से अधिक देशों के प्रतिभागी हिस्सा लेंगे। कार्यक्रम में पंजीयन प्रक्रिया, पुरस्कार व्यवस्था और आयोजन की वैश्विक पहुंच पर प्रकाश डाला गया। यह संवाद सत्र हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु शैक्षणिक संस्थानों को सक्रिय सहभागिता के लिए प्रेरित करने वाला सिद्ध हुआ।

संपादकीय मंडल

संरक्षक : प्रो. (डॉ.)अरुण रमेश जोशी,
कुलगुरु, सी. वी. आर. यू. खंडवा,
प्रधान संपादक : श्री रवि चतुर्वेदी,
कुलसचिव, सी. वी. आर. यू. , खंडवा,
कार्यकारी संपादक : प्रो. नेहा शुक्ला, मुख्य प्रकाशन अधिकारी
सदस्य : 1. डॉ. सीमा शर्मा, डायरेक्टर रिसर्च एंड इनोवेशन
2. डॉ. गणेश मलगाया, डायरेक्टर केंद्रीय प्रयोगशाला समन्वयक
3. प्रो. योगेश महाजन, तकनीकी अधिकारी, कुलगुरु सचिवालय
संकल्पना : श्री प्रमोद पटेल, ग्राफिक डिजाइनर
प्रकाशन विभाग
संचार एवं प्रसार : श्री मनदीप सिंह पंवार, अध्ययनशाला समन्वयक
आर्यभट्ट स्कूल ऑफ डिजिटल लर्निंग
श्री हमज़ा मलिक,
वनमाली केन्द्रीय ग्रंथालय

3.निमाड़ के मेधावी छात्र-छात्राओं को मिलेगा सम्मान का मंच, चमकेगा भविष्य का सितारा

दैनिक भास्कर और डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा के संयुक्त तत्वावधान मेंप्रतिभा सम्मान समारोह 2025का आयोजन किया जाएगा, जिसमें **निमाड़ अंचल — खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, बड़वानी और हरसूद क्षेत्र** के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान उन छात्रों को दिया जाएगा जिन्होंने वर्ष 2024-25 की एमपी बोर्ड एवं सीबीएसई परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। मंच पर विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह एवं स्मृति चिह्न प्रदान किए जाएंगे। कुलपति डॉ. संतोष चौबे ने इसे समाज व राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक प्रेरणादायक पहल बताया है।

4. डॉ. सीवी रमन विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया

डॉ. सीवी रमन विश्वविद्यालय, खंडवा में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। यह कार्यक्रम खेल विभाग एवं एनएसएस इकाई के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में पतंजलि योग केंद्र की प्रशिक्षक आस्था उपाध्याय मुख्य अतिथि रहीं। कुलपति डॉ. अरुण जोशी ने युवाओं से योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने का आह्वान किया। विद्यार्थियों ने योग मुद्राओं का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर योग को "सॉफ्ट पावर" बताते हुए भारत की प्राचीन संस्कृति की वैश्विक स्वीकृति पर प्रकाश डाला गया।

वृतांत

5.शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो विद्यार्थियों को सोचने-समझने की शक्ति दे: रवि चतुर्वेदी बुरहानपुर के 370 मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान, दैनिक भास्कर और डॉ. सीवी रमन यूनिवर्सिटी की संयुक्त पहल

दैनिक भास्कर और डॉ. सी.वी. रमन यूनिवर्सिटी, खंडवा के संयुक्त तत्वावधान में बुरहानपुर के 370 मेधावी विद्यार्थियों का प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में उन छात्रों को सम्मानित किया गया जिन्होंने वर्ष 2024-25 की बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि शिक्षा केवल अंकों तक सीमित न रहकर छात्रों को सोचने और समझने की शक्ति प्रदान करने वाली होनी चाहिए। समारोह में विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावकों और शिक्षकों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में विभिन्न संस्थाओं का विशेष सहयोग रहा।

6. शतरंज के साथ किताबों का अध्ययन करना भी जरूरी... तभी सफलता मिलेगी

कलेक्टर खंडवा में आयोजित रैपिड शतरंज स्पर्धा में 102 खिलाड़ियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता स्व. डीपी सिंह मेमोरियल स्पर्धा के अंतर्गत हुई, जिसमें जिले के विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने पांच चक्रों में मुकाबले खेले। **कलेक्टर डॉ. प्रतीक जैन** ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि शतरंज एकाग्रता, सोचने की क्षमता और रणनीति विकसित करता है, लेकिन किताबों का अध्ययन भी उतना ही जरूरी है। विजेताओं को ट्रॉफी व प्रमाण पत्र दिए गए।

आजीविका : एक समृद्ध और गरिमापूर्ण जीवन की आधारशिला

"रोटी, कपड़ा और मकान" — मानव जीवन की यह बुनियादी ज़रूरतें ही किसी भी समाज की विकास यात्रा का आधार हैं। परंतु 21वीं सदी में आजीविका का अर्थ केवल जीविका कमाने तक सीमित नहीं है, यह अब 'जीवन की गुणवत्ता' (quality of life) से भी गहराई से जुड़ चुका है। आजीविका अब व्यक्ति की आत्मनिर्भरता, सामाजिक सम्मान, मानसिक संतुलन और समग्र जीवन गुणवत्ता का पर्याय बन चुकी है।

आजीविका का बदलता स्वरूप

परंपरागत रूप से आजीविका का तात्पर्य कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प, लघु व्यापार आदि जैसे माध्यमों से जीवन यापन से था। लेकिन वैश्विक तकनीकी युग में आज आजीविका के साधनों ने डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स, स्टार्टअप, फ्रीलांसिंग, रूरल बीपीओ, ई-कॉमर्स, और गिग इकॉनॉमी जैसे नए आयाम पा लिए हैं। यह परिवर्तन न केवल रोजगार के अवसरों को बढ़ा रहा है, बल्कि जीवन की गुणवत्ता को भी समृद्ध बना रहा है।

जीवन की गुणवत्ता और आजीविका का संबंध

सार्थक आजीविका व्यक्ति को केवल आर्थिक स्थिरता नहीं देती, वह आत्मसम्मान, सामाजिक सुरक्षा और मानसिक संतुलन का अनुभव भी कराती है। जब कोई व्यक्ति अपनी रुचि, क्षमता और सामर्थ्य के अनुसार आजीविका अर्जित करता है, तो उसमें संतोष, आत्मगौरव और रचनात्मकता का विकास होता है — और यही जीवन की गुणवत्ता को परिभाषित करता है।

स्थानीयता से वैश्विकता की ओर

आज यह ज़रूरी हो गया है कि हम अपनी स्थानीय क्षमताओं, पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक विविधताओं को तकनीक और नवाचार से जोड़कर वैश्विक आजीविका के अवसर पैदा करें। ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं जब स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से जैविक खेती, हथकरघा या फूड प्रोसेसिंग से जुड़ती हैं, तो यह केवल आय का साधन नहीं होता, बल्कि उनके पूरे परिवार और समुदाय की जीवनशैली में बदलाव लाता है।

शिक्षा, कौशल और समावेशिता की भूमिका

एक समृद्ध आजीविका व्यवस्था के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समसामयिक कौशल, डिजिटल साक्षरता और सामाजिक समावेशिता आवश्यक हैं। इससे व्यक्ति अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग करते हुए न केवल स्वयं आगे बढ़ता है, बल्कि समाज को भी साथ लेकर चलता है।

आज जब हम 'विकास' की परिभाषा की पुर्नरचना कर रहे हैं, तो यह आवश्यक है कि आजीविका को केवल एक आर्थिक गतिविधि न मानकर, एक समग्र जीवन दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार किया जाए। सशक्त आजीविका के माध्यम से हम प्रत्येक नागरिक को एक सम्मानजनक, सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण जीवन देने की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं।

आजीविका और पंच पूंजी का सिद्धांत: गुणवत्ता से भरा जीवन

विकासशील समाजों में आजीविका (Livelihood) केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं, बल्कि जीवन की गुणवत्ता (Quality of Life) का मानदंड बन चुकी है। आज के बदलते तकनीकी, सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य में जीवन की सार्थकता सिर्फ कमाई तक सीमित नहीं रही, बल्कि उस कमाई के पीछे की स्थायित्व, सामुदायिक सहयोग, और व्यक्तिगत संतुलन को भी बराबरी का स्थान मिला है। इस संदर्भ में "पंच पूंजी" (Five Capitals) का सिद्धांत एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है जो मानव जीवन के विविध आयामों को समझने और संतुलित विकास की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करता है।

1. मानव पूंजी (Human Capital): यह पूंजी हमारे ज्ञान, कौशल, स्वास्थ्य और क्षमता को दर्शाती है। एक स्वस्थ, शिक्षित और प्रशिक्षित मानव संसाधन ही किसी राष्ट्र की सबसे बड़ी संपत्ति होती है। भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा में भी "विद्या धनं सर्वधनात् प्रधानम्" की मान्यता रही है, जो बताता है कि ज्ञान ही सबसे श्रेष्ठ पूंजी है।

उदाहरण: जब कोई युवा "डिजिटल मार्केटिंग" या "डेटा एनालिटिक्स" जैसे तकनीकी कोर्स सीखता है, तो वह अपनी मानव पूंजी को बढ़ाता है, जिससे उसकी रोजगार क्षमता बढ़ती है।

2. प्राकृतिक पूंजी (Natural Capital): प्रकृति हमें जल, वायु, भूमि, खनिज, वन और जैव विविधता जैसी अपार संपत्ति देती है। पारंपरिक भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माता के रूप में पूजने की परंपरा रही है — "वृक्षाः पितरः स्मृताः।"

उदाहरण: आज जब कोई किसान एग्रीटेक (AgriTech) समाधानों के माध्यम से स्मार्ट सिंचाई या मिट्टी परीक्षण तकनीक का उपयोग करता है, तो वह प्राकृतिक पूंजी का संरक्षण कर अपनी आजीविका को मजबूत करता है।

3. सामाजिक पूंजी (Social Capital): सामाजिक पूंजी विश्वास, सहयोग, नेटवर्क और संस्थागत संबंधों से जुड़ी होती है। गांवों में पारंपरिक 'समूह कार्य' और 'आपसी सहायता' जैसे तंत्र इसके उदाहरण हैं।

उदाहरण: जब किसी समुदाय में महिला स्वयं सहायता समूह मिलकर हस्तशिल्प या खाद्य उत्पाद तैयार करते हैं, तो उनका सामाजिक सहयोग उन्हें आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर ले जाता है।

4. भौतिक पूंजी (Physical Capital): भौतिक पूंजी में वे संसाधन आते हैं जो उत्पादन या सेवा में सहायक होते हैं — जैसे मशीनें, उपकरण, भवन, सड़कों या बिजली जैसी बुनियादी सुविधाएं।

उदाहरण: ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल लैब या मोबाइल नेटवर्क टावर की स्थापना से स्थानीय युवाओं को तकनीकी शिक्षा और ई-सेवाओं की पहुंच मिलती है।

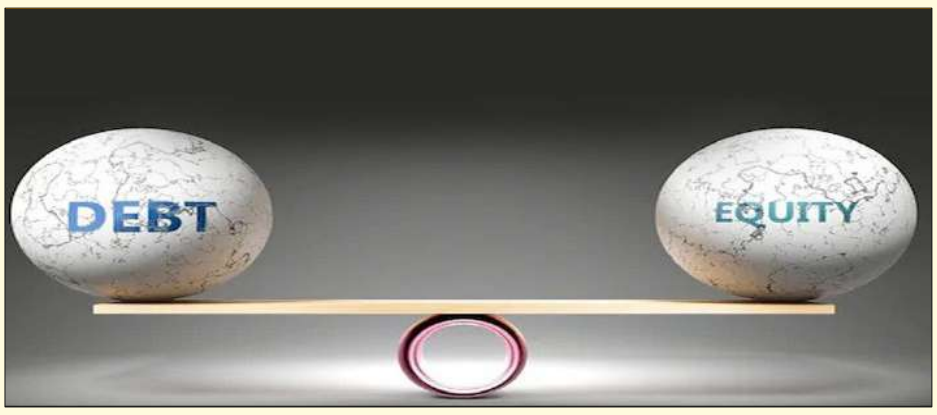

5. वित्तीय पूंजी (Financial Capital): यह पूंजी वह आधार है जो अन्य पूंजीयों को विकसित करने में मदद करती है। यह मुद्रा, बैंकिंग प्रणाली, ऋण-सुविधा और निवेश जैसे कारकों से संबंधित है।

उदाहरण: जब एक युवा स्टार्टअप के लिए मुद्रा योजना या स्टैंड-अप इंडिया जैसी सरकारी योजनाओं से फंडिंग प्राप्त करता है, तो वह अपने उद्यम को आकार देता है।

इन पंच पूंजी के समन्वित विकास से ही "गुणवत्ता पूर्ण जीवन" का मार्ग खुलता है। भारत की ज्ञान परंपरा — जिसमें कर्म, साधना, और सामूहिक कल्याण की अवधारणा रही है — इन पूंजीयों के संतुलन को सामाजिक दर्शन के रूप में स्वीकार करती है। यदि हम आजीविका के विकास को केवल आय से नहीं, बल्कि इन पूंजीयों के समृद्ध संतुलन से जोड़ कर देखें, तभी हम वास्तव में एक ऐसे समाज की ओर बढ़ सकते हैं जहाँ जीवन केवल जीने का नाम नहीं, बल्कि बेहतर ढंग से जीने की संकल्पना है। आजीविका और पंच पूंजी के इस संतुलन को अपनाकर हम न केवल व्यक्तिगत सफलता की दिशा में बढ़ सकते हैं, बल्कि एक आत्मनिर्भर, समावेशी और पर्यावरण-संवेदनशील समाज का निर्माण भी कर सकते हैं।

आजीविका कौशल विकास के लिए 10 प्रमुख मार्गदर्शी पुस्तकें"

"आजीविका कौशल प्रबंधन एवं विकास" (Livelihood Skill Management and Development) 21वीं सदी के भारत में एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन गया है, जहाँ शिक्षा, रोजगार, और आत्मनिर्भरता के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक है। यह क्षेत्र न केवल ग्रामीण युवाओं को सशक्त बनाता है, बल्कि राष्ट्र की आर्थिक संरचना को भी मज़बूत करता है। प्रस्तुत सूची में सम्मिलित 10 पुस्तकें इस विषय के विविध पहलुओं को उजागर करती हैं—जैसे कि ग्रामीण आजीविका के मॉडल, कौशल प्रशिक्षण की ज़रूरत, सरकारी योजनाएँ, उद्यमिता, और समुदाय-आधारित विकास। विद्यार्थियों, शोधार्थियों, और प्रशिक्षकों के लिए ये पुस्तकें एक मजबूत शैक्षणिक और व्यावहारिक आधार प्रदान करती हैं

10 प्रमुख मार्गदर्शी पुस्तकें"

१. आजीविका: ग्रामीण भारत के संदर्भ में"
लेखक: जीन ड्रेज़ एवं अमर्त्य सेन
यह पुस्तक ग्रामीण भारत में आजीविका के साधनों और उनके सामाजिक प्रभावों की गहरी समझ देती है।

2."Skill India: Modernizing Workforce for the Future"
लेखक: S. Chandrasekhar
भारत में स्किल डेवलपमेंट मिशन और उससे जुड़े अवसरों पर केंद्रित।

3. "Rural Livelihoods and Diversity in Developing Countries"
लेखक: Frank Ellis
आजीविका के विविध स्रोतों और ग्रामीण रणनीतियों की व्याख्या करती है।

4."Transforming India: Challenges to Livelihood and Sustainable Development"
लेखक: M. Moni
यह पुस्तक कृषि, ग्रामीण व्यवसाय और टेक्नोलॉजी आधारित आजीविका के क्षेत्रों में संभावनाओं पर प्रकाश डालती है।

5."Entrepreneurship and Skill Development in India"
लेखक: Debasish Biswas
उद्यमिता को आजीविका कौशल विकास के रूप में स्थापित करती है।

6. "Community Development and Livelihood Promotion"
लेखक: R. P. Misra
सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से आजीविका को बढ़ावा देने की रणनीतियाँ।

7. "Livelihood and Skill Development in India: Policies and Perspectives"
संपादक: S.K. Das
नीति और योजना आयोग की दृष्टि से विभिन्न सरकारी योजनाओं का विश्लेषण।

8. "The Skillful Economy: A Guide to Workforce Development"
लेखक: A. Mitra
अर्थव्यवस्था और श्रम बाज़ार में कौशल की भूमिका।

9. "Aajeevika Mission aur Gramin Rojgar"
लेखक: अजय कुमार पांडेय
DAY-NRLM (राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन) के दृष्टिकोण से।

10. "Vocational Education and Skill Development"
लेखक: Dr. R.C. Patel
व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए एक व्यवहारिक मार्गदर्शिका।

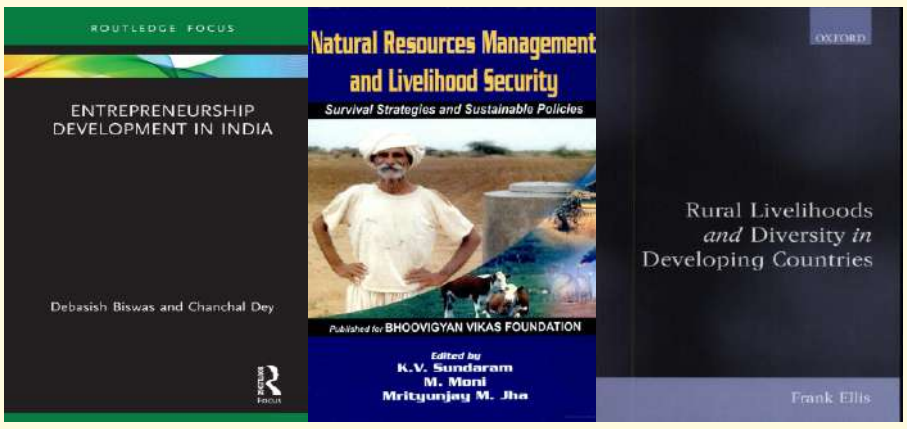

"आजीविका कौशल विकास: आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ता कदम"

आज के समय में आजीविका कौशल प्रबंधन एवं विकास न केवल व्यक्तिगत सफलता का माध्यम है, बल्कि यह समाज के समग्र विकास का भी आधार बन चुका है। जैसे-जैसे तकनीक और बाजार की ज़रूरतें बदल रही हैं, वैसे-वैसे युवाओं और महिलाओं के लिए नए कौशल सीखना और उन्हें अपने आजीविका साधनों में बदलना आवश्यक होता जा रहा है।

भारत सरकार और विभिन्न राज्य सरकारों ने इस दिशा में कई योजनाएँ और कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं, जिनका उद्देश्य है—लोगों को प्रशिक्षण देना, उन्हें तकनीकी रूप से सशक्त बनाना, और उन्हें स्वरोजगार या उपयुक्त रोज़गार से जोड़ना।

इन योजनाओं का आधार भारत की पारंपरिक ज्ञान परंपरा और आधुनिक नवाचार के संतुलन पर टिका है, जो जीवन की गुणवत्ता (quality of life) को सुधारने की दिशा में एक मजबूत कदम है। खासकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाले युवाओं और महिलाओं के लिए यह योजनाएँ आत्मनिर्भरता, आर्थिक सशक्तिकरण और सम्मानजनक जीवन का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

नीचे दी गई योजनाएँ इसी उद्देश्य की पूर्ति करती हैं — और हर इच्छुक व्यक्ति को अपने कौशल और आजीविका के बीच सेतु बनाने का अवसर देती हैं। यहाँ "आजीविका कौशल प्रबंधन एवं विकास" विषय पर आधारित प्रमुख योजनाओं की सूची दी गई है, जो युवाओं और महिलाओं के लिए विशेष रूप से लाभकारी हैं:

- **युवाओं के लिए प्रमुख योजनाएँ:**
  - प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)
  - नेशनल करियर सर्विस (NCS)
  - Startup India योजना
  - डीजिटल इंडिया स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम

- **महिलाओं के लिए प्रमुख योजनाएँ:**
  - दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (DAY-NULM)
  - प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान (PMGDISHA)
  - उज्ज्वला योजना से जुड़ी आजीविका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY Madhya Pradesh, Khandwa | RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY | AISECT UNIVERSITY Jharkhand, Hazaribag | DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY Chhattisgarh, Bilaspur | SCOPE GLOBAL SKILLS UNIVERSITY | DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY Bihar, Vaishali

University Campus: Village Balkhadsura, Post - Chhaigaon Makhan, Khandwa, Madhya Pradesh - 450771 Phone: 07320-247700/01
www.cvrump.ac.in
Connect with us: